अष्टावक्र गीता का ज्ञान – (2)

" मुक्त पुरुष की स्थिति कैसी होती है? "

संसार बन्धन से मुक्त पुरुष की स्थिति का वर्णन अष्टावक्र गीता के 17वें प्रकरण में विस्तार-पूर्वक मिलता है। यहाँ पर केवल तीन मुख्य सूत्र व उनके अर्थ दिए जा रहे हैं –

न निन्दति न च स्तौति न हृष्यति न कुप्यति।
न ददाति न गृह्णाति मुक्तः सर्वत्र नीरसः ॥१७-१३॥

अर्थात - "मुक्त पुरुष न निंदा करता है और न स्तुति करता है, न हर्षित होता है और न क्रोधित होता है, न देता है और न लेता है। वह सर्वत्र नीरस दिखाई देता है, यानी उसे संसार के सारे रस एक समान लगते हैं।" **(अष्टावक्र गीता – 17.13)**

सानुरागां स्त्रियं दृष्ट्वा मृत्युं वा समुपस्थितम्।
अविह्वलमनाः स्वस्थो मुक्त एव महाशयः ॥१७-१४॥

अर्थात - "प्रीति-युक्त स्त्री को देखकर जिस पुरुष के मन में विकार नहीं आता और समीप में मृत्यु को उपस्थित पाकर जिसका मन विचलित नहीं होता, वह पुरुष निश्चय ही मुक्त है। अभिप्राय यह है कि मुक्त पुरुष न तो काम-वासना की ओर आकर्षित होता है और न ही मृत्यु से भयभीत होता है।" **(अष्टावक्र गीता - 17.14)**

न मुक्तो विषयद्वेष्टा न वा विषयलोलुपः।
असंसक्तमना नित्यं प्राप्तं प्राप्तमुपाश्नुते ॥१७-१७॥

अर्थात - "मुक्त पुरुष न विषयों से द्वेष करने वाला है और न विषयों के लिए लालायित होने वाला है। सदा आसक्ति रहित मन वाला वह पुरुष प्राप्त और अप्राप्त दोनों का ही उपभोग करता है। अभिप्राय यह है कि उसे जो प्राप्त है उसका उपभोग तो करता है, परन्तु जो प्राप्त नहीं है उसकी चिंता न करते हुए आनन्दित रहता है।" **(अष्टावक्र गीता - 17.17)**